हरिश्चन्द्रविरचित "चन्द्रावली" के पाठ से मिलता है वही आनन्द इस के पाठ से मिलता है।

ग्रंथकार ने श्री जानकीवरशरण जी * के उत्साह से इस ग्रंथ की रचना की है। आप लिखते हैं :-

श्री जानकिवरशरणपद, प्रणवों बारम्बार।
मो से सठ पर है सदा, जिन की कृपा अपार॥
जा प्रसाद या लिखन को, उपज्यो सहज हुलास।
पुनि जाके आसीस तें, लह्यो यहां†को बास"॥

यह ग्रंथ श्री अयोध्या जी में लिखा गया है और इस के लिखने में ग्रंथकर्त्ता को श्री महात्मा रामरसरङ्गमणि जी से सहायता मिली थी। इसी से ग्रंथकार ने लिखा है:—

"बन्दो श्री रसरङ्गमनि, चरन जोरि जुग पानि।
दीन्हि जो सहज सहायता, मोहि शिष्यसम जानि"॥

यह पुस्तक पहिले १८९६ में छपी थी। फिर बांकीपुर "खड्गविलासयंत्रालय" के विद्यारसिक अध्यक्ष और ग्रंथकर्त्ता के परम मित्र म० कुमार बाबू रामदीन सिंह ने १८९७ ई० में इस की दूसरी आवृत्ति प्रकाशित की।

(७) "श्री मद्भगवद्गीता के बारहवें अध्याय की टीका"—यह टीकाही नहीं है, वरन भगवद्गीता के बारहवें अध्याय के आधार पर भक्तिसाधन विषयक एक वृहत् प्रबन्ध लिखा गया है। इस में सर्वत्र अनेक प्रमाणों से पुष्टित सार-गर्भित उपदेश भरा हुआ है। इस भक्तिसाधन के प्रबन्ध के अन्तर्गत जो कुछ "अभ्यास" "त्याग" और "शान्ति"

---

* श्री अयोध्या लक्ष्मणकिला के महानुभाव पण्डित-मण्डल-भूषण।

† अयोध्यावास।

आदि के विषय में लिखा गया है वह सब भी एक २ स्वतन्त्र प्रबन्ध कहा जा सकता है । शरीरपालनसम्बन्धी बातें भी इस में बहुत सी लिखी गई हैं । पुस्तक का विषय तो सर्व-श्रेष्ठ है ही, भाषा भी सरल, सरस और मधुर है । पढ़ने से मन नहीं उचटता, बरन उसी ओर अधिक २ चित्त आकर्षित होता जाता है । यदि आप भगवद्गीता के अन्य अध्यायों की भी ऐसी ही टीका कर दें तो लोगों का बड़ा उपकार हो ।

ग्रंथकार ने इस पुस्तक को श्री हनुमान जी को अर्पण किया है और लिखा है:—

"तुमहि मातु पितु परम हित, तुम मम गुर भगवान ।
'रूपकला' सियकिंकरी, बिनवति श्री हनुमान ॥
सियपिय नखसिख नाम गुन, 'गीता' आर्य्य विवेक ।
विरचि यथामति कापिकृपा, भक्तिरहस्य अनेक ॥
कपिकरकंजनं माँहि सोइ, अरपों मन बच काय ।
रामदूत करुणायतन, सो कीजै अपनाय ॥
पुनि पुनि बिनवों जोरि कर, मोहि कृपा कर देहु ।
श्री सिय,सियपिय पदकमल, अविरल विमल सनेह ॥
पुनि गुरुकापि ! निज चरन रति, सियपद मम मन गेह ।
सिय सेवा दम्पति चरन, भक्ति सुसंगति देहु ॥

यह पुस्तक पढ़ने के लिये हम सब लोगों को अवश्य अनुरोध करेंगे । और यदि इस के सर्व विषय स्मरण रखने में कठिनता हो तो इस पुस्तक के अन्तिम दोहे को सदैव स्मरण करने की प्रार्थना करेंगे । यह बड़ा ही कल्याणदायक होगा ।

" बिगड़ी जन्म अनेक की, सुधरे अब हीं आज ।
होहु राम को, रामजपु, तुलसी तजि कुसमाज ॥ "

यह पुस्तक प्रथम बार १८९८ ई० में छपी थी। इस की अधिक चाह होने से ई० १९०२ में इस की दूसरी आवृत्ति हुई। प्रथमावृत्ति में "मंगलमयीमाला" अर्थात् १०८ सन्तों की नामावली भी छपी थी। द्वितीय आवृत्ति में वह नहीं छपी है। किन्तु ग्रंथकर्त्तारचित "रूपकलाप्रणयबतीसी" अर्थात् ३२ दोहे एवम् श्लोक और कवित्तादि पुस्तक के अन्त में दिये गये हैं। "प्रणयबतीसी" ऐसी प्रेमरसपूर्ण है कि पढ़ने से चित्त विह्वल हो जाता है।

(८) "टीकाभक्तमाल"—इस पुस्तक के चार भाग छप चुके हैं। पहिले दो भागों में सतयुग, त्रेता और द्वापर के भक्तों की कथाएं वर्णित हैं। तीसरे से कलियुग के भक्तों का वृत्तान्त आरम्भ हुआ है। इन ग्रंथों में पहिले श्री १०८ स्वामी नाभाजी विरचित छप्पै, फिर श्री प्रियादासप्रणीत टीका के कवित्त दिये गये हैं, तदनन्तर इन्हों ने गद्य में उन पर तिलक किया है। पूरे भक्तिभाव से सप्रेम इन पुस्तकों की रचना हुई है। भाषा सरस है; अभिप्राय बहुत सुन्दर रीति से स्पष्ट कर दिया गया है। कठिन शब्दों का अर्थ भी दिया हुआ है। आवश्यकीय नोट और टिप्पणियां भी इन ग्रंथों का सौंदर्य्य बढ़ा रही हैं। इन ग्रंथों की रचना में भी श्री सीतारामशरण भगवानप्रसाद को श्रीरामरसरङ्गमणि जी से सहायता मिली है और उन्हीं से इन्हों ने "भक्तमाल" पढ़ा भी है। इसी से इन्हों ने इस ग्रंथ की टीका के अन्त में उन की प्रशंसा में यह छप्पै लिखा है :—

"गुरुप्रद सीतारामशरण गहि तिलक मालधर। अगुन सगुन बुधि बोध, रामजस ललित कवित कर॥ तुलसिदास बाल्मीकि रचित रामायण नेही। अर्थ भावविद सुनत,

सैरस ढंग, पुलकित देही ॥ 'रूपकला' कह विरतियुत सियपिय प्रीति अनन्य चित। सखाराम रसरङ्गमनि, नाम जपत बसि धाम नित ॥"

यह ग्रंथ भी इन्हों ने श्रीहनुमानजी को समर्पण किया है।

अच्छे२ महात्माओं और समाचारपत्रों ने इन ग्रंथों की सुन्दर समालोचनाएं की हैं। एक महाशय ने लिखा है :—

"चातकभक्तन को रह्यो, जा पर प्रेम अपार।
'सुधाबिन्दु' सोइ स्वातिजल, स्वाद लेहु सुखसार ॥"

और डाक्टर ग्रियर्सन साहिब बहादुर महोदय ने लिखा है कि " यह बहुत ही उत्तम और उपयोगी ग्रंथ है, हम इस को बड़े चाव से पढ़ते रहे हैं *।

इस ग्रंथ के चारों भागों के प्रकाश का क्रम यह है—प्रथम भाग (पृ० १-१९२) १९०३ ई०; द्वितिय भाग (पृ० १९३-३७२) १९०४ ई०; तृतिय भाग (पृ० ३७३-५७८) १९०५ ई०; चतुर्थ भाग (५७९-८३९) १९०७ ई०।

इन पुस्तकों को सीतामढ़ी बुलाकीपुरनिवासी श्री बलदेवनारायण सिंह वकील गया ने प्रकाशित किया है।

श्री नाभाजीकृत हिन्दीभक्तमाल का श्रीकृष्णरामदास † ने बंगला भाषा में पद्यबद्ध अनुवाद किया है।

---

* Dr. G. A. Grierson C. I. E., Ph. D., M. R. A. S. :

" Sita Ram Sharan Bhagawan Prasad's edition of Bhaktamal. It is a most important and valuable work, and I have been reading it with the greatest interest. "

† बेलघरिया स्टेशन से आध कोस पूर्व निमिताग्राममें मौलिक कायस्थ कुल में १८६६ ई० में इन का जन्म हुआ था। इन के पिता का नाम भगवतीदास था। इन्हों ने "रायमंगल" और

(९) "श्री सीतारामसानसीपूजा" वा "भावना अष्टयाम"—आठ पहर किस प्रकार श्रीसीताराम की पूजा करनी चाहिये यही बात इस में वर्णित हुई है। ग्रंथकार ने दिखलाया है कि वे प्रातःकाल से किस रीति से ईश्वरपूजा में समय व्यतीत करते हैं। अभिप्राय यह कि अन्य सीतारामीय भी इस से शिक्षा ग्रहण करें। इस पुस्तक को भी उपर्युक्त श्री बलदेवनारायण जी वकील गया ने प्रकाशित किया है। यह पुस्तक १९०७ ई० छपी है।

(१०) "भगवन्नामकीर्त्तन"—यह एक बहुत ही छोटी पुस्तिका है। इस में नामकीर्त्तन के छोटे २ विविध प्रकार के ४५ छन्द संगृहीत हुये हैं। कंठस्थ हो जाने से १५-२० मिनिट में आदमी इसे नित्य पाठ कर सकता है। यह पुस्तिका सन् १८९९ ई में प्रकाशित हुई थी।

(११) "श्री सीतारामीय प्रथम पुस्तक"—इस में रामायणादि अनेक सद्ग्रंथों से भिन्न २ देव सम्बन्धी श्लोक तथा

"कालिकामंगल" की भी रचना की है। यही "कालिकामंगल" बंगभाषा का प्रथम "विद्यासुन्दर" है। इस में कलकत्ता का उल्लेख देखकर पं० हरप्रसाद शास्त्रीने इस की रचना का समय १६९८ ई० अनुमान किया है। इस में चैतन्यदेव की वन्दना देखने से एवम् इनके "भक्तमाल" ग्रंथ का बंगभाषा में अनुवाद करने से बोध होता है कि ये वैष्णव थे। पूर्व बंगाल के कवि प्राणराम चक्रवर्ती ने स्वरचित "कालिकामंगल" (विद्यासुन्दर) में निज पूर्ववर्त्ती "विद्यासुन्दर" के रचयिता कवियों का उल्लेख किया है। यथा "विद्यासुन्दरेर एई प्रथम विकाश। विरचिल कृष्णराम निमिता यार वास॥ ताहार रचित ग्रंथ आछे ठाईं ठाईं। रामप्रसादकृत आर देखा पाई॥ परे ते भारतचन्द्र अन्नदामंगले। रचिलेन उपन्यास प्रसंगेर छले॥"

भाषा के पद्य संगृहीत हुए हैं। यह ग्रंथ रचने का अभिप्राय यह है कि काम काजी लोग, जिन्हें विस्तारपूर्वक पूजापाठ का कम अवकाश मिलता है, इस का नित्य पाठ कर के लाभ उठावें। इसी से यह पुस्तक छोटी बनाई गई है। परन्तु धर्म्मोपदेशमयी पुस्तक छोटी क्या और बड़ी क्या? वे तो तुल्य ही कल्याणकारिणी हैं और जो किसी छोटी वस्तु से अधिक जन लाभ उठावें तो यथार्थ में वही बड़ी है। यह पुस्तक १९०५ ई०में छपी है और ज़िला सारन के अवहरग्रामनिवासी स्वर्गवासी श्रीहनुमनशरण बाबू सूर्य्यप्रसाद वकील छपरा ने इसे निज व्यय से छपवा कर प्रकाशित की है।

यह बात ऊपर कही गई है कि इन की भाषा सरल और मधुर होती है और "श्री पीपा जी की कथा" की समालोचना में यह भी कही गई है कि सर्वत्र ईश्वर के सम्बोधन में इन्हों ने लच्छा का लच्छा ऐसा विशेषण दिया है कि जिस के उच्चारण और श्रवण से आनन्द प्राप्त होता है। अच्छा अब उस का कुछ नमूना देखिए।

"अकार, विस्तार, बेदसार, रहितविकार, कामादिकानलतुषार, अपरम्पार, ओंकार, हरनधरणीभार, परमउदार, गुणागार, निराकार, साकार, संसारपार, संसारसार, जगपादपकुठार, अवधेशकुमार, श्रीमिथिलेशनन्दिनीप्राणाधार।"

"पालकनिजपन, पञ्चानन, महामोहगजपञ्चानन, रमारमण, खरारि दूषणहन, दुःस्वप्नदोषदमन, जनार्दन, संसृतिशमन, पुरातन, सनातन, अघटितघटन, व्यापकपरब्रह्म सच्चिदानन्दश्यामघन, सुमनोर्चितसुमन, निर्गुण गुणभवन, महिभारभञ्जन, सुरमुनिरञ्जन, विपतिगञ्जन, दुखदलन, सुखसदन, धृतबाणशरासन, शोभानिधि प्रियदर्शन, स्वजनसर्व-

रवन, मुनिधन, प्रसन्नवदन, भक्तउरचन्दन, नृपनन्दन, श्री कौशल्यानन्दवर्द्धन, कलिमलदहन, ज्ञानगहन, भयमोचन, राजीवलोचन, श्रीजानकीजीवन।"

जो लोग तुकान्त की खोज में व्यग्रचित्त रहते हैं, उन्हें इन की रचनाओं से बहुत सहायता मिल सकती है। परन्तु पाठकवृन्द यह कदापि न समझें कि इन्हों ने अपने सारे ग्रंथों में ऐसी ही क़ाफ़ियाबन्दी की है। यदि केवल यही बात होती तो इन की रचना बहुत प्रशंसा के योग्य न होती। किन्तु इन की लेखप्रणाली ऐसी सुन्दर एवम् सरल है कि सुलेखकों में इन की गणना अवश्य हो सकती है। आप लोग और भी नमूना देख लीजिये।

"यद्यपि सन्त साधारण राजाओं से प्रायः नहीं मिला करते, क्योंकि, एक तो यथालाभ सन्तोष उन का सहज स्वाभाविक लक्षण है, दूसरे तमोगुणी संसर्ग तथा रजोगुणी अन्न से सतोगुणी वृत्ति आदि का एक साथ ही अभाव हो जाता है, और शरीर त्यागने के समय जैसा अन्न पेट में होता है प्रायः वैसी ही सुरति रहती है और जैसी सुरति तैसी ही गति, अतएव भजन पर भोजन का भी बड़ा अधिकार मान उस का संयम सावधानतापूर्वक अवश्य है"

पाठकवृन्द! आप लोगों ने लेखप्रणाली का नमूना तो देखाही, पर इस उपदेश को भी अवश्य मन में रख कर सब के साथ खानपान की प्रथा के डंका बजानेवालों से चौकन्ने रहियेगा और जो लोग पत्तल ही में मुहब्बत् की उपज बता कर और दोस्तनानी बनने ही से जगत को वा निज जठा को उन्नति की शिखर पर घसीट के जाना चाहते हैं तनिक उन से भी सावधान रहियेगा।

अब आप लोग इनके रचेहुए कुछ पद्योंको भी देखिये। परन्तु स्मरण रखियेगा कि इन की भावना शृङ्गार है तब इन के पद्यों का यथार्थ भाव समझ में आ सकेगा।

"जो न कृपा कर आप हीं, मिलहु मोहि तुम आय।
तौ कि टहल बल कबहुं पिया, पहुंचि सकौं हौं धाय॥"

सच है, ईश्वर की स्वयम् कृपा विना कोई जप, योग वा भक्ति के बल से उस की कृपा का भाजन कब हो सकता है?

"व्यर्थ सिराँहि सिराँहि बरु, जन्म समूह अनेक।
चहिहौं सियपिय, आन नहिं, 'रूपकला' कै टेक॥"

बस यही अनन्यता और सच्चा प्रेम है और यही अपना कुछ प्रभाव भी दिखला सकता है।

"रूपकला कब चढ़हि? सखि! ज्ञान योग असिधार।
बाला सीख विराग किमि? निरत भाव शृङ्गार॥
ज्ञान, योग, बैराग्य, तप, दीन्हेउ सकल बहाइ।
बांकी चितवनि पीय की, राख्यों हिय अटकाइ॥
मनि, मानस, स्वातीजलद, जल,मनि, अवधकिशोर।
रूपकला, फनि, हंसिनी, चातकि, मीन, चकोर॥
छाड़ि कपट पिय हेतु जौं, 'मन से' त्यागै रंग।
तौ फिर, 'तनु से' व्यर्थ क्यों, फसिबो बेमुखन संग॥
दिएउ कृपाकरि मोहि, पिय! अमित अनूप प्रसाद।
कहँ लगि, किहि बिधि करौं तव, धन्यवाद गुणवाद॥"

इन की रचनाओं में दोहा ही अधिक पाया जाता है। परन्तु इस से कुछ क्षति नहीं। विषय सुन्दर होना चाहिये किसी छन्द में हो। समालोचकों को इन की कविता चाहे सरस लगे चाहे नीरस, किन्तु हरिभक्तों को तो इन की कविता पर अवश्य चित्त ठहरे गा इस में सन्देह नहीं।

ईश्वरप्रेम की ओर चित्त आकर्षित करने में इन की रचनाएं चाहे गद्य हों चाहे पद्य कदापि निर्बल नहीं। जिस अभिप्राय से इन्हों ने ग्रंथों की रचना की है वह अभिप्राय उन के पाठ से अवश्य सिद्ध होता है इस में किञ्चिन्मात्र सन्देह का स्थान नहीं। भाषा सरल और सरस होने से विषय हृदयांकित हो कर अपना प्रभाव जमाने की पूर्ण सामर्थ्य रखता है और इन की पुस्तकों के पढ़ने से मन नहीं उकताता। गद्य-पद्यमिश्रित होने से वे अधिकतर लावण्यमयी हो गई हैं और भिन्न २ महानुभावों के उल्लेखित वाक्यों ने उन्हें और भी रोचक बना रक्खा है। सरांश यह कि इन की रचनाएं उपयोगी एवम् पाठनीय है तथा ईश्वर के अमल कमलपदों में अचल प्रेम उपजानेवाली हैं। इन्हों ने निज पुस्तकों की रचना भी इसी निमित्त की है, कविमंडल में उच्चासन पाने की मनसा से नहीं यह हमारा अटल विश्वास है। हम ने भी इन्हें कवि का मुकुट पहिना कर पाठकों के सामने उपस्थित करने का विचार नहीं किया है। ये ईश्वर के एक बड़े कृपा-पात्र हैं, इन की यथार्थमूर्ति, भक्तिमयीमूर्ति, प्रेममयीमूर्ति, अनन्यतामयीमूर्ति, आप लोगों के सामने खड़ी की गई है। आप लोग इसी मूर्ति का दर्शन कीजिये, इन के सदोपदेशों को ग्रहण कीजिये, इन के आचरणों का अनुकरण कीजिये और इन के समान ईश्वर का प्रेमभाजन बनने की चेष्टा कीजिये, इसी से आप लोगों का कल्याण और हमारा परिश्रम सफल होगा।

द्वादश परिच्छेद ।

कुलपरिवार ।

अब हम पाठकों को ग्रंथनायक के भाइयों और बहनों का कुछ हाल सुनाते हैं। इन के ज्येष्ठ भ्राता बाबू लालसा प्रसाद जी अभी तक जीवित हैं। हिन्दी, उर्दू और फ़ारसी अच्छी रीति से जानते हैं। आप चौथे क्लास तक छपरा ज़िला स्कूल में अंगरेज़ी पढ़ कर घर के काम काज में लग गये और इस ग्रंथ के नायक से ५ वर्ष बड़े हैं।

श्री सीतारामचन्द्रप्रसाद ग्रंथनायक से १५ वर्ष छोटे थे। उन का जन्म जनवरी १८५५ ई० में हुआ था। स्कूल में पढ़ने ही के समय उन्हों ने हमारे चरित्रनायक के श्री गुरुदेव से रामचन्द्र का उपदेश लिया था, और दीक्षित होने के अनन्तर वे धर्म्मसम्बन्धी सब कामों में अपने भाई तथा गुरुभाई से सम्मति और शिक्षा लिया करते थे। धर्म्म में उन की बड़ी श्रद्धा थी। पाठ जप में कभी कसर नहीं होता था। शरीर अस्वस्थ रहने पर एवम् कामों की भीड़ होने पर भी वे अपना पूजापाठ नहीं छोड़ते थे। स्कूल में पढ़ने ही के समय वे एक बार पांव प्यादे ही श्री अयोध्या जी दर्शन करने गये थे और पांव ही पांव वहां से लौट आये थे।

पढ़ने में वे बहुत तेज़ थे और उसी समय से उन का स्वभाव सर्वदा शान्त रहा। सब लोग उन से प्रेम रखते थे और उन्हें प्यार करते थे। वे हाकिमों के भी सदैव स्नेहपात्र रहे।

छपरा ज़िला स्कूल से एंट्रेन्स पास कर के और पटना

कालेज् में प्रायः एक वर्ष पढ़ कर वे जमुई मिडिल स्कूल के हेड् मास्टर और तदपश्चात मुंगेर गवर्नमेंट् नार्मल स्कूल के हेड् मास्टर हुए जिस समय ग्रंथनायक वहां के डिपुटी इंस्पेक्टर स्कूल बनाये गये थे।

जैसे पुत्र पिता के साथ स्नेह रखता है, जैसे शिष्य गुरु के चरणों में प्रेम रखता है और उन लोगों का सम्मान करता है एवम् उन का आज्ञानुवर्ती रहता है वैसे ही वे निज सहोदर इस ग्रंथ के नायक का सम्मान करते, इन से स्नेह रखते और इन की आज्ञा पालन करते थे।

जब कभी वे अपने मित्र श्रीरामहित शर्म्मा के सङ्ग श्री अयोध्या जी जाते थे तो रामघाटनिवासी अपने विरक्त चचा पूर्वोक्त श्री तुलसीराम जी के स्थान का अवश्य दर्शन करते और अपने भाई श्रीसीतारामशरणभगवानप्रसाद से सदा यही कहते थे कि "भैया हमारी भी यही इच्छा होती है कि आप और हम इस जगज्जंजाल को त्याग कर श्री साकेतवासी चचा जी के समान अयोध्या जी ही में निवास करें और सरयू (वशिष्टनेत्रज) के ही तट पर शरीर त्याग करें।"

बात हुई भी ऐसी ही। इस ग्रंथनायक के श्री अयोध्या में वास करने के अनन्तर भाई के वियोग से व्यथित हो कर वे अस्वस्थ हो गये। छुट्टी लेकर श्री अयोध्या जी गये। घर लौटने का इरादा नहीं था। पेन्शन पाने के लिये दरख़ास्त भेजने का विचार कर ही रहे थे कि इतने में ५वीं फागुन शुक्ल पक्ष सम्बत् १९५१ (१८९४ ई०) में श्री अयोध्या जी में सरयू के तट पर उन की साकेतयात्रा हुई। मन की अभिलाषा पूरी हुई। उन्हों ने यह कहा था कि "मेरा शरीर जलाया न जाय और न मेरी समाधि की विधि की

जायँ, किन्तु जो प्रथा श्री रामानन्दीयवैष्णवों में प्रचलित है उसी रीति से मेरा शरीरसत्कार किया जाय।" परन्तु उन के बड़े भाई बाबू कालिकाप्रसाद तथा उन के चचेरे भाई बाबू जानकीप्रसाद ने ऐसा नहीं किया क्योंकि वे लोग गृहस्थाश्रमी थे। सुनते हैं कि अन्त में उन्हों ने इसी रीति से रामनामोच्चारण करते शरीर त्याग किया था।

"सीताराम! जय तुम्हारी, मैं तुम्हारा हूं और तुम्हारे शरण में हूं। सीताराम सीताराम।"

उन का विवाह शुसांवगांव में हुआ था और उन की स्त्री अच्छी पढ़ी लिखी थी। इस ग्रंथनायक की स्त्री के स्वर्गवास के एक दो वर्ष पूर्व ही उन की स्त्री का स्वर्गप्रयान हो गया था।

श्री सीतारामचन्द्रप्रसाद जी कविता भी करते थे और उन्हों ने हमारे चरित्रनायक की एक संक्षिप्त जीवनी भी लिखी है। उन की निम्नाङ्कित कविता हम को प्राप्त हुई।

(अनूप छन्द)।

"जयराम! रूपरासि कृपासिंधु सुखसदन।
सीता-नयन-चकोर सरद-पूर्ण-ससि-बदन॥
राजीवनैन, नीलसरोरुह तमाल तन।
लावण्यता विलोकि लजित कोटि सत मदन॥
दसरथतनय, प्रमोदविहारी, रमारमन।
गौरीशप्रिय, विरञ्च अमर सेव्य, स्यामघन॥
दससीसरिपु, खरारि, स्वभक्तापदादलन।
मुनि, विप्र, सन्त, धेनु धरा देव दुखदमन॥
करकंजचांपबान, मनोहरजलजनयन।

सौंदर्य्यखान, मूरतिमाधुर्य्य, छविअयन ॥
केवल कृपा तुम्हारि है कलिकालमलशमन ।
विनु तव भजन, सुखी नहिं करि कोउ शतयतन ॥
हियेहारि नाथ ! एक तुम्हीं सर्वभयहरन ।
'सीता' सवेरे आएउ प्रभु पद्मपदसरन ॥ *

दोहा—जय जय जय सीतारमन, तुम सम और न दानि ।
'सीता' मांगत भक्तिवर, परम सुअवसर जानि ॥

प्रतीत होता है कि इस छन्द की रचना किसी विशेष अवसर पर हुई थी। जो हो, पाठकवृन्द उन की कविता-रचना का अन्दाज़ तो इस से अवश्य लगा सकते हैं।

खेद का विषय है कि ऐसे धार्म्मिक वंश का संसार में नामरक्षण करने वाला कोई नहीं दीखता, क्योंकि किसी भाई को कोई सन्तति नहीं है।

ग्रन्थनायक की बहिनों में से एक बहिन जिन का विवाह ज़िला सारन धोबौल हरपुरकराह के पास किसी अच्छे घर में हुआ था निस्सन्तान ही मरीं। उन से छोटी बहन का विवाह ज़िला सारन बनियापुर के पास मौज़ा धौरी में बाबू केदारनाथ† से हुआ था। बहिन ने तो स्वर्गप्रयान किया परन्तु उन के गर्भजात एक पुत्र बाबू सूर्य्यप्रसाद वर्तमान हैं।

इन की चचेरी बहिनों में से एक का विवाह खगौल

---

* यह कविता फ़ारसी के इस शेर के वज़न पर लिखी गई है।

گویند بے ثبات بود نقس روی آب *
دل آب گشت ونقش تمنا نمی رود *

† इन का पैतृकघर रमडिहरा ज़िला शाहाबाद था। मौज़ा धौरी में ये बाबू अवधीलाल के कर्तपच थे।

ज़िला पटनानिवासी बाबू ब्रजनन्दन सहाय से हुआ है जो आरे के एक प्रसिद्ध वकीलों में से हैं। शेष का वृतान्त हम को ज्ञात नहीं।

त्रयोदश परिच्छेद।

सहपाठी, मित्र और कृपापात्र।

इस परिच्छेद में इन्हीं लोगों की नामावली तथा इन्हीं लोगों का कुछ विवरण उल्लेख किया जाता है।

सहपाठी।

१. बाबू यदुनाथ सहाय, वकील, छपरा। } *
२. ,, रघुनाथ सहाय वकील छपरा। }
३. ,, बंशीधर गुप्त वकील छपरा।
४. ,, रामप्रकाश लाल सब रजिस्ट्रार, समस्तीपुर।
५. श्री पण्डित केशवनाथ, काश्मीरी (चकवस्तसोपूरी) अयोध्या जी। †

मित्रवर्ग।

१। श्रीअवधबिहारीशरणजी—ये जाति के ब्राह्मण, मोबारकपुर ज़िला सारनके रहने वाले, ग्रंथनायक के अनन्य मित्र

---

* छपरा के प्रसिद्ध रईस और वकील श्री वास्तव कायस्थ मु० हीरालाल के पुत्र। अब ये लोग संसार में नहीं हैं, परन्तु इन लोगों के वंशज, जिन में दो महाशय इस समय भी वकील हैं, छपरा के प्रतिष्ठित पुरुषों में गिने जाते हैं।

† श्री अयोध्या नरेश के दरबार में हैं।

एवम् बालसखा थे। जिस समय ग्रंथनायक अङ्गरेज़ी पढ़ते थे ये महाशय संस्कृत अध्ययन करते थे। पीछे विरक्त होकर छपरा से दोमील पूर्व रौज़ा नामक स्थान में एक मन्दिर निर्माण कर के और उस में श्री कृष्ण तथा श्री शिव जी की मूर्तियां पधरा कर वहीं रहने लगे थे। ये ऐसे स्थान में कभी नहीं जाते थे जहां से दिन में एक बार भी श्री गङ्गा जी का दर्शन कठिन हो जाय। ये एक अच्छे पण्डित और हरिभक्त थे।

२। महाराज कुमार बाबू रामदीन सिंह जी—बांकीपुर के सुप्रसिद्ध "खड्गविलास" यन्त्रालय * के स्वर्गीय स्वामी, हिन्दी के परम हितैषी तथा प्रसिद्ध प्रचारक संयुक्त प्रदेश के बलिया निकटवर्ती रेपुरा गांव के रहने वाले "हयहो" वंशीय क्षत्रिय थे। विहारप्रान्त में इन के समान तन मन धन लगा कर हिन्दीभाषा के प्रचार के लिये आज तक कोई यत्नवान नहीं हुआ। भारतभूषण भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, मझौलीनरेश लाल खड्ग बहादुर मल्ल, पण्डित वर प्रतापनारायण मिश्र एवम् दामोदर शास्त्री आदि के सभी ग्रंथों को इन्हों ने प्रकाशित किया है। ये छोटे बड़े सबों से स्नेहपूर्वक मिलते थे। ये विद्वान, गुणवान, सन्त, महात्माओं की सेवा में सदा लगे रहते थे। भारतवर्ष के किसी प्रान्त का कोई ऐसा सुप्रसिद्ध पुरुष नहीं था जिस से इन्हें मित्रता, परिचय वा पत्रव्यवहार न रहा हो। इन के तीन पुत्र म० कु० रामरणविजय सिंह, शारङ्गधर सिंह और रामजीसिंह में से बड़े पुत्र एफ़०ए० क्लास में पढ़ते हैं।

३। मुन्शी अम्बेसहाय साहिब—आप कायस्थ थे। सर्वदा

* ग्रन्थनायक ने "स्वरचित और प्रकाशित" सब ग्रंथों के छापने का अधिकार—चाहे उस की रजिस्टरी हुई हो चाहे नहीं, इसी प्रे[illegible] को दे दिया है।

श्री अयोध्या में वास कर श्री हरिभजन में अपना समय व्यतीत करते थे। एक साल श्री जानकीनवमी की रात को अपने सामने रंथी बनवाकर और कफ़न किनवा कर येपरमधाम के यात्री हुए। उन्हों ने अपना मन्दिर श्री गोमतीदास जी को दे दिया। ये कुछ कविता भी करते थे।

४। पण्डित श्रीभानुप्रताप तिवारीजी—हेड् क्लार्क कन्टूनमेन्ट् चुनार, मिरज़ापुर। ग्रंथनायक के पिताजी से भी इन्हें बहुत आत्मीयत्व था। आप ने कबीरजी की "रमयनी" (बीजक) का उल्था अंगरेज़ी में किया है। "विनयपत्रिका" का भी अंगरेज़ी अनुवाद कर रहे हैं जिस का नमूना * नोट में दिया हुआ है।

५। बाबू सन्तप्रसाद जी—आरानिवासी श्रीवास्तव कायस्थ। पहिले डिपुटी कलक्टर थे। अब पेन्शन् पाते हैं। सुनते हैं कि आप बड़े प्रेम से "विनयपत्रिका" पाठ करते थे और श्री गंगा जी में स्नेह रखते थे। इन के दो लड़के

---

* बिषयबारि मनमीन भिन्न नहिं होत कबहुं पल एक।
ता तें सहिय बिपति अति दारुन जनमत जोनि अनेक॥
कृपा डोरि, बंसी पदअंकुस, परमप्रेम मृदुचारो।
एहि बिधि बेगि हरहु मेरो दुख कौतुक राम तुम्हारो॥

"From the water of worldly desires the fish of my mind is not separated foı a moment.

Hence, I have to suffer unbearable pain of my repeated births—by transmigration of soul-in various kinds of beings.

Please make yonr mercy fishing stiing, the maık of crooked goad on the sole of your holy feet, ,iron hook, the perfection in your love, sweet bate.

By this means, O God ! if you will pierce the fish of my mind, it will be an amusement for you. &c. &c.

सबडिपुटी कलक्टर हैं और एक विलायत में "सिविलसर्विस पास" करने गये हैं।

६। बाबू रामप्रकाश लाल—बाँकीपुर निकटस्थ मैनपुरा-निवासी, श्रीवास्तव.कायस्थ। आप पहिले डि० इन्स्पेक्टर स्कूल थे। अब पेन्शन पाते हैं। आप का स्वभाव बड़ा सरल है और आप एक सज्जन पुरुष हैं। धर्म्म में भी आप की अच्छी रुचि है।

७। पण्डित बलदेव मिश्र बी०ए०—कान्यकुब्ज ब्राह्मण, असिस्टैंट इन्स्पेक्टर स्कूल, पटना डिवीज़न। आप का घर छपरा ज़िले के धनाव नामक ग्राम में है। आप का शील-स्वभाव सराहनीय है।

कृपापात्र।

१। श्री पण्डित उपाध्याय श्रीरामहित शर्म्मा—रामपुर (वाल) नगरा ज़िला सारन निवासी, प्रमोदवन कुटिया, श्री अयोध्या। आप श्री बाल्मीकीय रामायण तथा श्री मद्भागवत की कथा अच्छी रीति से कहते हैं और हरिकृपा से आप की कथा श्रवणमात्र से बहुत से श्रोता वैष्णव तथा हरिभक्त हो जाते हैं। आप कुछ कविता भी करते हैं।

२। श्री सीतारामप्रपन्न गयादत्त चौबे जू—चौबेबेल, हल्दी, बलिया। श्री रामचरित मानस के बड़े रसिक और अनन्य भक्त। प्रति वर्ष श्री अयोध्या जी दो तीन बार नियम से जाते हैं। इन की कथा सुनने योग्य होती हैं।

३। बाबू श्री दुर्गाप्रसादजी—छपरा ज़िला के जानकी *

* उसे पहले हसनपुरा कहते थे। इन्हों ने उस गांव को परिष्कृत कर के निज पिता के नामानुसार उस का जानकीनगर नाम

नगरनिवासी श्रीवास्तव कायस्थ। कुछ दिन कलकत्ता हाई-कोर्ट में वकालत करते थे। अब छपरा की वकीलमण्डली के मुखिया हैं। ये बड़े सुशील और मिलनसार हैं। छपरा में सनातनधर्म्म के ध्वजा समझे जाते हैं। श्री कनकभवन-बिहारीशरण जी महाराज (अयोध्या) के बड़े कृपापात्र हैं। इन का एक भवन श्री अयोध्या जी में भी है जिस गृह की प्रतिष्ठा का उत्सव बड़ी धूमधाम से हुआ था।

४। बाबू श्री बलदेवनारायण सिंह जी (प्रणयकला)-बुलाकीपुर श्री सीतामढ़ी मुज़फ़्फ़रपुर के रहने वाले, ऐठाना कायस्थ हैं। गया में वकालत करते हैं। श्री रामनारायण शुक्ल जी के शिष्य हैं। *

५। नायक श्री श्यामसुन्दरशरण जी—शिवबखरी, बारहकोनी, बस्ती। श्री अयोध्या जी प्रमोदबन में भी आप का एक राममन्दिर है। उस के कोठे पर आप ने दो कोठरियां विशेषतः श्री सीतारामशरणजी के लिये "सुन्दरकुंज" के नाम से बनवा दी हैं, जो उस में अपनी पुस्तकादि रखते हैं, क्योंकि इन की निवास की कोठरी बहुत लम्बी चौड़ी नहीं है। एकान्त जान कर पुस्तकावलोकनार्थ ये उस कुंज में नित्य दो एक घंटा बैठते हैं। यद्यपि इन की आंखों की शक्ति ऐसी कम

रक्खा है ; और वहां पर एक सुन्दर मन्दिर बनवा कर और उस में श्री सीताराम तथा श्री शिवपार्वती की मूर्तियां स्थापित कर राग भोग के निमित्त रजिस्टरी दानपत्र द्वारा गांव भी निकाल दिया है। प्रति वर्ष वैशाख त्रयोदशी को वहां मेला होता है और प्रति सप्ताह में दो दिन बेल का हाट लगता है।

* देखिये पृ० ९७-९८ जहां इन का सविस्तर हाल लिखा गया है।

हो गई है कि बिना बहुत निकट आये ये किसी को पहचान भी नहीं सकते तथापि पुस्तक पाठ का अनुराग अभी तक कम नहीं हुआ है।*

६। पण्डित श्री हरिहरशरण उपाध्याय (हरितमणि)—ज़िला रामपुर, नगरा, सारन के रहने वाले पूर्वोक्त श्री रामहित शर्म्मा जी के पुत्र हैं। "बिहार संस्कृत सञ्जीवनी" की परीक्षाओं में उत्तीर्ण हो कर "टाइटिल" परीक्षा के लिये विद्याध्यन कर रहे हैं।

७। बाबू श्री सीतारामाश्रित द्वारिकाप्रसाद जी—ज़िला सारन बगौरानिवासी, श्री वास्तव कायस्थ। पहले डिपुटी इन्सपेक्टर स्कूल थे और अब पेन्शन पा कर श्री अयोध्या जी में सपरिवार रामभजन का आनन्द लाभ किया करते हैं। इन के घर श्री रामनवमी का उत्सव बड़ी धूमधाम से हुआ करता था। उस समय ग्रंथनायक इन के घर प्रायः जाया करते और छुट्टी के दिनों में ये दोनों महाशय तथा ग्रंथनायक के लघु भ्राता श्री सितारामचन्द्रप्रसाद एवम् पण्डित रामहित उपाध्याय साथही साथ तीर्थाटन को विशेषतः श्री अयोध्या जी जाया करते थे।

८। बाबू श्रीकृष्णदेवनारायण सिंह जी—ये जाति के खत्री, शाहपुर सुतिहार ज़िला सारन के रहने वाले हैं। छपरा ज़िला स्कूल में मास्टर थे। अब पेन्शन लेकर काशी वास करते हैं और श्री अयोध्या भी प्रायः जाया करते हैं। ये उर्दू, फ़ारसी और हिन्दी भाषा में कविता करते हैं। उर्दू और फ़ारसी की कविताओं में अपना नाम "अजीब" और हिन्दी कविता में "कनकलता" लिखते हैं।*

* इन्हों ने "अनुराग मुकुल", "कुसुमन" "अनुराग-

हम को इन की बनाई "ग़ज़लियातेअजीब" पुस्तक देखने में आई है जिस में इन्हों ने स्वरचित फ़ारसी और उर्दू की ग़ज़लों को संग्रह किया है। आप लोग भी उस का एक दो अशआ़र सुन लीजिये। यथाः-

"वादा किया है आने का उस माहरू ने आज।
दिल झांकता है सीनय सूराख़दार से॥
जाकर फिर आउंगा दरे जन्नत से मैं ज़रूर।
उखड़ा जो होगा यार का वां नक़शे पा नहीं॥"

९। श्रीजानकीप्रपन्न राजेन्द्रप्रसाद जी (माधुर्य्यकला)- ज़िला सारन कटेयांरामपुरनिवासी रायअङ्गद सिंह क़ानूनगोय सारन के वंशज मु० दुर्गादत्त के पोते तथा मु० राधावल्लभ सहाय के पुत्र। इन का जन्म २५दिसम्बर को१८६५ई० में छपरा महल्ला साहिबगंज इन के नानिहाल में हुआ। बचपन में ये अपने नाना मु० हरप्रसादसिंह* उपनाम दारोग़ाजी के साथ (जो बड़े धर्म्मनिष्ठ थे और काशी में वास करते थे) काशी में रहे। उन के स्वर्गवास पर छपरा आकर ये निज मातुल मु० बिश्वेश्वरप्रसाद वकील की सहायता से अंगरेज़ी पढ़ने लगे। १८८७ ई० में एफ़० ए० पास कर के छपरा में छठवां मास्टर और कुछ दिन के बाद डिपुटी इन्स्पेक्टर स्कूल हुए। अब मुंगेर ज़िला स्कूल में हेड्मास्टर हैं। शिक्षाविभाग

मञ्जरी", "अङ्गरेज़ी भाषा की ख़ालक़बारी" (Nosegay of English words) और "ग़ज़लियाते अजीब" की रचना की है।

* इन्हों ने "काशीरहस्य", "काशीप्रकाश", 'भक्तमाल", "ज्वर-नाशक-कथा", "कलङ्क-नाशक-कथा" तथा "भजनावली' की रचना की थी जिन में से कोई पुस्तक तो छपी है और किसी की हस्तलिखित कापी पड़ी है।

के अफ़सरों ने इन्हें "कार्सियांग विक्टोरियाट्रेनिंग कालेज्" में विज्ञानादि सीखने को भेजा था।

वहां जाने के पूर्व पूर्वोक्त श्रीकृष्णदेवनारायण सिंह जी की सहायता से इन्हें हमारे चरित्रनायक का पहले पहल दर्शन हुआ। तभी से ये महात्मा जी के एक विशेष कृपापात्रों में से हैं और उस कृपा के प्रभाव से इन की सांसारिक एवम् आध्यात्मिक उन्नति बराबर होती जाती है। ये बहुतही नम्र और मिलनसार हैं।

१०। श्री कनकभवनविहारीशरण बाबू श्री व्रजेन्द्रप्रसाद M. A. B. L.—ज़िला आरा, बँधवानिवासी मु० शिवप्रसाद लाल (पेन्शनर नाज़िर जजी) के कनिष्ठ पुत्र। लड़कपन ही से इन्हें दम्मे का रोग हो गया था। कलकत्ता तथा बनारस के प्रसिद्ध डाक्टरों और कविराज आदिकों की औषधि करते २ ये थक गये थे और उन लोगों ने इन के रोग को असाध्य बतला दिया था। गत दो वर्ष से इन की अवस्था अच्छी नहीं थी। ये सर्वथा सामर्थहीन हो कर निज जीवन से निराश हो गये थे। गत श्रावण सं० १९६४ में लोगों ने इन्हें श्री अवध के दर्शन की सम्मति दी। वहां जा कर ये हमारे चरित्रनायक के चरणों पर गिर कर उन की कृपा के प्रार्थी हुए। महात्मा जी ने इन पर बड़ी दया दर्सायी। ये लगभग ३ मास श्री अयोध्या में जमे रहे और दुर्बलता के कारण ठेलागाड़ी पर चढ़ कर देव और महात्माओं के दर्शन को जाते थे। चलते समय महात्मा जी ने इन्हें आशीर्वाद किया कि "अब की बार जब आओगे तो अपने पैरों चलकर देवदर्शन करोगे।" बात ऐसी ही हुई। गत होली के समय इन्हों ने छपरा से श्री

अवध प्रस्थान किया। जाने के दिन तक ये स्वस्थ नहीं थे। बीमारी इन्हें घेरे हुई थी। ये रेल गाड़ी में सो रहे। जब मनकापुर में गाड़ी पहुंची तो इन्हों ने अपने को सर्वथा स्वस्थ और कोसों पैदल चलने के योग्य पाया। इस प्रकार एकाएक निरोग हो जाना तो आश्चर्यजनक था ही, इस से बढ़ कर आश्चर्य की बात यह हुई कि उसी क्षण इन्हें शारीरिक और मानसिक बल भी पूर्णरूप से प्राप्त हो गया। महात्मा जी तथा श्री ५ गोमतीदास जी की कृपा से इन की बीमारी सब प्रकार से दूर हो गई। निज गुरु के सिवाय सब से अधिक महात्मा जी ही की कृपा से इन की धर्म्म में भी निष्ठा बढ़ी और अन्य रीति से भी ये उस कृपा का अनुभव कर रहे हैं। श्री "कनकभवन विहारी जी" तथा श्री "प्रमोदवन विहारी जू" के चरणकमलों में इन का बड़ा विश्वास और प्रेम है।

११। बाबू श्री रघुवीरनारायणशरण जी–ज़िला सारन नयागांवनिवासी मु० जयदेवनारायण जी वकील (छपरा) के पुत्र, अंग्रेज़ी के अच्छे कवि हैं। इन्हों ने "A Tale of Bihar नामक एक अंग्रेज़ी कविता लिखी है और उसे H. R. James साहिब पटना कालेज़ के भूतपूर्व प्रिंसपल को समर्पण किया है। कविता बड़ी ही रोचक है। Sir Lewis Morris, Sir William Wedderburn तथा विलायत के वर्तमान राजकवि (Poet Laureate) Mr. Alfred Austin* साहिब ने उस की अच्छी प्रशंसा की है। इन्हों ने श्रीगोस्वामी तुलसीदासकृत रामायण का भी अंगरेज़ी में पद्यबद्ध अनुवाद आरम्भ

* January 16, 1906.

Dear Sir, Pray accept my sincere thanks for your courtesy in sending me a copy of "A Tale of Bihar." Your knowledge

किया है। ईश्वर इन्हें इस में सफलमनोरथ करें। ये हिन्दी में भी कविता करते हैं।

इन्हें धड़का और कमज़ोरी की बीमारी हो गई थी। सर्व प्रकार का औषधिप्रयोग निष्फल पा कर ये हमारे चरित्रनायक के शरणापन्न हुये जिन की कृपा और आशीर्वाद से अब ये भले चंगे हो चले हैं। इन पर पूर्वोक्त श्री गोमतीदास जी की बड़ी कृपा रहती है।

१२। बाबू गोविन्ददेवनारायणशरण जी—ज़िला सारन, अर्नानिवासी स्वर्गीय मु० व्रजविहारी सहाय वकील (छपरा) के पुत्र हैं। इन के मातापिता बड़े धर्म्मिष्ठ और श्रीसीताराम के उपासक थे और ये स्वयम् श्रीराधाकृष्णजी के उपासक हैं। श्री अयोध्या जी के राजभवन के श्री "राधामाधव जी" तथा श्री "कनकभवन विहारिणी विहारी जी" के पदपंकज में इन की बड़ी श्रद्धा और प्रीति है। श्री युगल सरकार की इन पर सदैव अपूर्व कृपा रहती है। निज गुरु स्वामी के सिवाय सब से अधिक ग्रंथनायक ही की कृपा इन पर हुई है जिस से इन को विशेष सफलता प्राप्त हुई है।

१३। बाबू भगवतनारायणशरण जी—फलाहारी, रामपुरडीह, दर्भंगा, डिपुटी इन्स्पेक्टर स्कूल मोज़फ़्फ़रपुर। आप

---

of the English tongue is complete and your mastery over more than one form of its verse equally so. I receive many volumes of verse from my countrymen at home that cannot compare in execution with yours. Your attainments in this respect do you great honor and I offer you my warm and sympathetic congratulations.

Believe me,
Yours faithfully,
Sd. Alfred Austin.

भजन में बड़ी निष्ठा रखते हैं। आप के स्वभाव से आप के अफ़सर, मातहत एवम् परिचित जन सबही अति प्रसन्न रहते हैं।

१४। प्रेमी सुन्दर जी (श्रीरामसुन्दरशरणजी, लावण्य-लता)—वेरावलबन्दर, काठियावार। ये प्रेमी जी जिस समय " श्रीजानकी जीवन करुणानिधि " उच्चारण करते हैं सुनने-वाले प्रेम में मग्न हो जाते हैं। आप ने अपने आसपास में रामायण के पाठ तथा श्रीसीताराम-नाम-कीर्त्तन का बड़ा प्रचार किया है। गुजराती भाषा में भक्तमाल आप ने भले प्रकार से देखा है। आप श्रीअयोध्यानिवासी श्री रामवल्लभाशरण जी के शिष्य हैं। आप के समागम में बड़ा आनन्द आता है।

१५। बाबू श्री कमलेश्वरी सहाय जी–भुलावं, सारन; रेलवे स्टेशन मास्टर इस्माइलपुर E. I. Ry.। कायस्थ श्रीवा-स्तव, वैष्णव। आप बड़े भजनानन्द, बड़े परिश्रमी हैं और नियम से रहते हैं। रेलवे की नोकरी में भी पूजापाठ का आप को समय कम नहीं मिलता। सच है क्वीन एलिज़ाबेथ् (Queen Elizabeth) का कथन है कि "जिसे जिस काम का अनुराग होता है उस को उस काम के लिये अति आवश्य-कीय कार्य्यों के मध्य में भी समय मिल जाया करता है।"

१६। बाबू राम महेश प्रसाद, B. A.–बलरामपुर, गोंडा, फ़ैज़ाबाद, अवध। वैष्णव, कायस्थ। फ़ैज़ाबाद कलेक्टरीमें क्लार्क हैं, तनख़ाह ८०) है। फ़ैज़ाबाद से श्री अयोध्या जी महीने में तीन चार बार आ कर ठाकुरबारियों में ठाकुर जी तथा महात्माओं का दर्शन करते हैं। फ़ारसी भाषा के अच्छे ज्ञाता और श्री रामायण के रसिक हैं। इन के भाई बाबू रामेश्वर-प्रसाद बहराइच में वकील हैं।

१७। बाबू मदनमोहन सहाय सिंह (मोदमणि)–बाबू सूर्य्य-प्रसाद जी वकील के पुत्र। अपहर, सारन निवासी। कविता भी करते हैं। इन के पिता ने सीतारामशरण जी के "भगवन्नाम कीर्त्तन" तथा "सीतारामीय प्रथम पुस्तक" की प्रथम आवृत्ति को प्रकाशित किया था।

१८। बाबू कमलेश्वरी प्रसाद वर्मा (अनुरक्ति कला)–गिरिहिनडा, शेखपुरा, मुंगेर। पूर्वोक्त मुं० शिवनारायण लाल के भतीजा हैं। ग्रंथनायक कृत "सीतारामीय प्रथम पुस्तक" की दूसरी आवृत्ति को इन्हों ने प्रकाशित किया है। मुंगेर फ़ौजदारी कचहरी में नक़लनवीस हैं।

१९। डा० श्रीसीतातनय अवधबिहारीशरण–शिताबदि-आरा, ज़िला सारननिवासी। मोज़फ्फ़रपुर में डाक्टरी करते हैं। जब ये बांकीपुर में पढ़ते थे उसी समय वहां के सनातन-धर्म्मप्रचारिणी सभा में विशेष उत्साह दिखलाते थे। बरन सच पूछिये तो उस सभा के और बांकीपुर में उस समय जो रामलीलामण्डली बनी थी उस के यही मुख्य कारण थे।

२०। बाबू श्री किशोरीशरण जी (कनकप्रभा)–भभुआ, शाहाबाद। रजिस्टरी आफ़िस में दस्तावेज़नवीस हैं। श्री अयोध्या जी के रामफ़क़ीरा जी के शिष्य हैं। जाप और पाठपूजा में बड़ा परिश्रम करते हैं। प्रति संवत्सर में दो बार श्री अयोध्या जी का दर्शन करते हैं।

२१। बाबू युगलकिशोरशरण (सौन्दर्य्य कला)–बगौरा, सारन। वैष्णव, कायस्थ श्रीवास्तव। बाबू द्वारकाप्रसाद जी के पुत्र। पटने की कमिश्नरी में नक़लनवीस हैं। "हरि संकीर्त्तन समाज" के सभासद हैं। गाने बजाने में भी इन की भारी रुचि है।

२२। बाबू जानकीशरण खेदनलाल (प्रेमकला)-गुदड़हट्टा, भागलपुर, क्लार्क डिस्ट्रिक्ट बोर्ड। श्री रामोपासक। श्री हंसकला जी के बड़े कृपापात्र। सुनते हैं कि आप को श्री मुकुट का दर्शन हुआ है और आप की स्त्री को ध्यान में प्रभु का दर्शन हुआ है।

२३। बाबू तपस्वीलाल-हरदेई, देसरी मोजफ्फरपुर। आप मुंगेर कलक्टरी में महाफ़िज़ दफ़तर हैं। आप बड़े वेदान्ती, बड़े विज्ञानी और अनन्य श्री रामोपासक हैं। १६०९ ई० से पेन्शन् ले कर श्री अयोध्या में बसने का आप ने प्रबन्ध किया है।

२४। बाबू रामजानकीशरण हरजीवन लाल बी० ए० (प्रेमलता)-हुमायूंपुर कोइली के रहनेवाले, असिस्टंट हेड् मास्टर मोज़फ्फरपुर कलेजियेट स्कूल।

२५। मु० रामसेवक राम साहिब-असिस्टंट तुलसीपुर, राज्य बलरामपुर, गोंड़ा, अवध। इन का एक भवन श्री अयोध्या जी में भी है।

२६। बाबू श्री रामायणशरण ठाकुरप्रसाद बी० एल०—अम्बष्ट कायस्थ। सिकन्दरपुर, भागलपुर के रहने वाले। ये आज कल मुन्सिफ़ हैं।

२७। भैया श्री रामरघुबीर जी - आनरेरी मजिस्ट्रेट, फ़ैज़ाबाद, अवध। सेठ श्रीकन्नूमल भगत जी के पोते। महात्माओं के कृपापात्र।

२८। बाबू अनमोलप्रसाद—मुख़्तार, पचलखी, सिमरिया, सारन छपरा, (पूर्वपुण्यपुंज)।

२९। बाबू जानकीशरण बुलाकी लाल वर्मा—रिजिस्टरी आफ़िस, लक्खीसराय, मुंगेर।

३० । बाबू गिरिवरधारी लाल - करताहा, लालगंज, मोज़फ़्फ़रपुर, डेप्युटि इन्स्पेक्टर स्कूल हैं । इस ग्रंथकर्त्ता के गोतिया और परम स्नेही हैं । आप का स्वभाव सरल और सुन्दर है ।

३१ । श्री युगलानन्द ब्रह्मचारी जी—शिकारपुर, नरकटियागंज, चम्पारन । परमहंस श्री सीताशरणजी के शिष्य, (कायस्थ) ।

३२ । बाबू वागीश्वरीप्रसाद—तहसीलदार, मुन्शी शिवनारायणलाल रईस के पुत्र, गिरिडिण्डानिवासी ।

३३ । बाबू जगदम्बे सहाय, बी० एल०—वकील, मुजफ़्फ़रपुर, वैष्णव, कायस्थ अम्बष्ट ।

३४ । बाबू श्रीअम्बिकाप्रसादजी (लालित्यकला)—विछियावां, कोरी, शाहाबाद । श्रीवास्तव ।

३५ । पुरुषोत्तम जी (हरितलता)—मारवाड़ी, बड़ा भजनानन्द, कटरा, छपरा सारन ।

३६ । बाबू श्रीमहावीरप्रसादजी—कलेकुरी, बारहबंकी, फ़ैज़ाबाद, अवध ।

३७ । दारोग़ा भगवान सहाय जी-सबइन्स्पेक्टर पूलिस, गया । ग्राम बहुआ सारंगडुमरी, थाना रघुनाथपुर सिवान, ज़िला सारन ।

३८ । जमादार ठाकुरप्रसाद, - हेडकांस्टेब गया । ग्राम खुटहा, ज़िला शाहाबाद । वैष्णव ।

३९ । बाबू उदयप्रकाश लाल साहिब—गया निवासी, सरिश्तेदार कलेकुरी, सारन । "श्रीहरिसंकीर्त्तनसमाज" छपरा के सभापति ।

४० । बाबू रामचन्द्रप्रसाद (कैंकर्य्य कला)—कल्यानी, मुज़फ्फ़रपुर । कायस्थ ।

४१ । बाबू श्रीरामेश्वरप्रसाद जी—वकील, बहराइच; (बलरामपुर, गोंडा), अवध ।

४२ । श्रीवैदेहीशरण महेन्द्रप्रसाद तिवारीजी-परसा, सारन । श्रीसीतारामोपासक ।

४३ । बाबू रघुवंश सहाय-बाबू राजपतिसहाय जी के पुत्र, सैदपुर, परसा, सारन । वैष्णव ।

४४ । बाबू जगदम्बिकाप्रसाद जी-(इन्स्पेक्टर सर्वजीत-लाल के पुत्र), बलरामपुर, गोंडा ।

४५ । बाबू श्री मथुराप्रसाद, बी० ए०-लखनऊ ।

४६ । मौलवी दियानत् हुसैन् साहिब-सबइन्स्पेक्टर, पेन-शनर, सनहा ; अतासराय, (बिहार पटना) । बड़े साहित्य-प्रिय ।

४७ । बाबू रामगोविन्दशरण-(हेडमास्टर ट्रेनिंगस्कूल, श्री सीतामढ़ी); शिवहर, मुज़फ्फ़रपुर । वैष्णवकायस्थ पेठाना ।

४८ । बाबू श्री रामलेकावन लाल—प्रसाद, कारीसाथ, शाहाबाद । कलेक्टरी के नाज़िर थे, पेन्शन पाते हैं ।

४९ । बाबू गौरीशंकर-वकील, स्वर्गद्वार अयोध्या ।

५० । श्री जगन्नाथप्रसाद जी-राजघाट, काशी ।

५१ । श्री सर्वरीश जी—लक्ष्मण क़िला, श्री अयोध्या जी ; बड़ी उत्तम कविता करते हैं ।

५२ । श्री प्रभु दयालशरण जी-रईस हैदरगढ़ ।

५३ । श्री प्रभु दयालशरण जी-हापड़, मीरठ ।

५४ । बाबू कैलाशबिहारीशरण जी (विनयकला)-विछि-आंव, ज़िला आरा । पटना कलक्टरी में क्लार्क हैं । श्री राम-

लीला में इन की बड़ी श्रद्धा और निष्ठा हैं। बांकीपुर रामलीलामण्डली के प्रधान कार्य्यकर्त्ता है। इन के पिता का नाम मु० नथुनीलाल है।

५५। पंडित श्री शौकीलाल झा—सुलतानगंज।

५६। बाबू इन्द्रदेव नारायण जी—भुसावँ, सारन।

५७। श्री बासुदेवनारायणप्रसाद सिंह जी—रामपुर (बाल), नगरा सारन। वैष्णव।

५८। मुनशी मुनसीमण्डल मुज़फ्फ़रगंज, खर्गपुर, मुंगेर।

५९। बाबू श्रीधर प्रसाद सिंह—नरहरपुर किशनपुरा।

६०। बाबू श्री सियदेव नारायणशरण—शिवहर।

६१। बाबू श्री उद्धव जी माली, शिवहर, तिर्हुत।

६२। बाबू लालबहादुर जी—ज़िला मुज़फ्फ़रपुर।

६३। बाबू जगदीपशरण—शिवहर, तिर्हुत।

६४। बाबू श्री रामेश्वर प्रसाद—मुख़तार, तिर्हुत।

६५। बाबू विष्णुदेवनारायण जी—अर्ना, सारन।

६६। बाबू श्री राधाकृष्ण जी—फतहगंज, गया।

६७। बाबू श्री धनेशचन्द्र प्रसाद जी—श्री हनुमन्निवास अवध के श्री६ गोमतीदास जी के शिष्य। सीतारामभवन, छपरा।

६८। बाबू गोपाललाल (श्री मिथिलेश्वरी शरण)—बहुबारा, चबारा, मुंगेर। क्लार्क, पटना।

६९। विदेहजा शरण बिसेसरलाल (प्रेमअली)-प्रमोदवन।	हरिहरगंज, जि० पलामू
७०। श्री अ० सियाशरण महादेवलाल।	डालटनगंज।

७१। दीवान देवनारायण लाल-फ़तहपुर, गया।

७२। बाबू देवीदयाल जी-बलरामपुर, गोंड़ा।

७३। बाबू रामविलास सिंह-बहपुरा, पटना।

७४। श्री हीरा भगत जी-सुलतानगंज, भागलपुर।

७५। बच्चू बाबू शिवनन्दन जी-बिरनावां; पकरी बर्मा, गया, वैष्णव कायस्थ श्रीवास्तव।

७६। बाबू गणेश प्रसाद, बी० ए०—बलरामपुर।

७७। बाबू अयोध्यानाथ शरण, बाबू जवाहिर लाल मुख्तार के पुत्र मनेर, दानापुर।

७८। बाबू माधवप्रसाद-सबइन्स्पेक्टर, पूर्णिया।

७९। रामहर्ष नारायण शरण-मझौल, मुंगेर।

८०। बाबू श्री रामनन्दशरण सिंह-परसा, सारन।

८१। बाबू विष्णुवल्लभा प्रसाद-Gymnast दर्भंगा, (छपरा), वैष्णव, कायस्थ।

८२। बाबू हरिहरप्रसाद जी-क़िस्तपट्टी, महल्ला हाजीपुर, खगरियागंज, मुंगेर।

८३। राम सुझावन भगत-परसा सारन, ज़िला।

८४। बाबू भमधुरधर सिंह-मुज़फ्फ़रपुर।

८५। बाबू बच्चू सिंह खत्री-शाहपूर सुतिहार, सारन।

Regiment 3, Skinner's Horse.

८६। बाबू सोहराईराम-अ० मास्टर, गया।

८७। महाबीर राम हलवाई-परसा, सारन।

८८। रामनागर जी-मारवाड़ी, श्रीसीतामढ़ी।

८९। बाबू जगन्नाथलाल, (चम्पलता)-हास्पिटल असिसटंट (शिताब दियारा)।

९०। बाबू विन्धेश्वरी प्रसाद जी-हज़ारीबाग़।

९१। श्री हरनारायण प्रसाद जी-जानकीनगर, गरखा, सारन, बाबू श्री दुर्गाप्रसाद बी०एल०, वकील के चिरञ्जीवी।

९२। बाबू त्र्यंबकेश्वर लाल-इन्स्पेक्टर सर्वजीत लाल के भतीजा, बलरामपुर गोंडा, (देउरिया, गोरखपुर)।

९३। बाबू साहिब दयाल-बलरामपुर, गोंडा।

९४। बाबू शिवेश्वरदयाल बी० ए० कदमकुआं, बांकी-पुर पटना ; बड़े साहित्य प्रिय।

९५। बाबू रामप्रिया शरण ताराप्रसाद वर्मा-दहियावां, छपरा ; मास्टर हाइ इंग्लिशस्कूल, गोपालगंज, सारन।

९६। बाबू बिलासबिहारी सहाय-दियवलिया सीवान, सारन (B. A. Student.)

९७। बाबू नारायणदत्त जी-पिपरा, सारन।

९८। बाबू विश्वनाथ चरण—(सारन) बांकीपुर।

९९। पंडित श्रीश्यामलाल तिवारी जी रामपुर मगरा, सारन, वैस्णव, श्रीहरि कथा के बड़े प्रेमी हैं। कथा में अमृत की वर्षा करते हैं।

चतुर्दश परिच्छेद ।

ग्रंथनायक पर कृपा दरसाने वाले महानुभाव ।

यहां पर उन महानुभावों की नामावली दी जाती है जिन लोगों की ग्रंथनायक पर विशेष कृपा रहती आई है और रहा करती है। महात्माओं के नामोच्चारण और दर्शन से मन की मलिनता नाश होती है एवम् प्रभु के पादपद्म में प्रीति प्रतीति जन्मती है। आशा है कि हमारे पाठकगण इन नामों का भी प्रेमपूर्वक पाठ करेंगे। नामावली के पन्नों को बिना पढ़े ही नहीं उलट देंगे। इस में उन का कल्याण है।

जिस २ समय जिन २ महात्माओं का ग्रंथनायक पर विशेष कृपा हुई वह समय तथा स्थानादि का हाल भी प्रत्येक महात्मा के नाम के सामने दी जाती है।

१	१८४९	बदनपुरा प्रयाग जी।	श्री६ रामदासजी महाराज (बचपन में),* साकेत वास।
२	१८५९	परसा गोदना सेमरिया सारन	गुरु भगवान अनन्त श्रीरामचरणदास महाराज जी†। भाद्र कृष्ण एकादशी सम्वत् १६४१ में आप का साकेत वास हुआ।
३	,,	छपरा सारन।	श्री ६ तुलसीरामजी। श्री अयोध्या ही से साकेत वास हुआ।
४	,,	बिरान्द, छपरा सारन।	श्री ५ युगलप्रियाजी (श्री५ जीवाराम जी) ‡ साकेत वासी।

* पृ० १२-१३ देखिये।

† पृ० ६ और ११ देखिये।

‡ अवध के लक्ष्मणकिला के बनाने वाले श्री युगलानन्य जी के गुरु।

५	१८६०	रेपुरा कसार, सारन।	श्री५कान्हरदासजी,गोलोकवासी।
६	१८६२	कलकत्ता।	श्रीलक्ष्मीनारायणमपन्नजी,परधाम
७	१८७१	बेगूसराय, मुंगेर	श्री १०८ श्यामनायका (रामदास जी) * श्रावण शुक्लएकादशी, १९५४ सं० में साकेत वास।
८	,,	श्रीकाशी जी, कमक्षा।	श्री ५ टीकमदासजी, साकेतवासी
९	,,	श्रीअयोध्याजी	श्री रघुनाथदासजी, साकेतवासी।
१०	१८७२	,,	मुंशी श्री प्रेमदास विरक्त, परधाम
११	,,	,,	पुजारीश्रीजगदेवदासजी,वर्त्तमान हैं
१२	,,	,,	श्री अवधशरणजी, साकेतवासी।
१३	१८७७	,,	श्री ज्ञानाअली जी, साकेतवासी।

* आप कायस्थ-कुल-भूषण, विरक्त वैष्णव, बड़े योग्य महानुभाव हुये हैं। बालपनही में वैरागीहो दक्षिणमें जा मरहठी, द्राविड़ तथा संस्कृत में ये अच्छी विज्ञता प्राप्त किये। कहते हैं कि किष्किन्ध्या में अंजनीपर्वत पर महारानी अंजनी जी का अनुष्ठान कर उन की प्रसन्नता से श्रीअंजनीनन्दन, पवनतनय, श्रीरामदूत महावीर, हनुमानजी का दर्शन पा भक्तिवरदान ले आज्ञा सीस धर जन्मभूमि (बेगूसराय, सब डिवीज़न में) तथा गुरुस्थान की झांकी करने आए। एक सेवक अग्रवाला ने सुन्दर ठाकुरबारी बना दी। उस में ठाकुर स्थापना कर वहां की महंती सूजा-विष्णुपुर के प्रसिद्ध महंत की सम्मति से अपने चेले नारायणदास को दे, आप सम्वत १९५४ के श्रावण शुक्ल एकादशी को साकेतवासी हुए। आप श्रीसीताराम-शरण के शिक्षगुरु—(सतगुरु) शृंगार भावना के गुरु—थे। ग्रंथनायक आपही के साधक चेला, कृपापात्र हैं। इन पर बड़ी कृपा रखते थे जिस का धन्यवाद हम से हो नहीं सकता।

१४	१८८१	भागलपुर सिटी, गुड़हट्टा।	श्री १०८ हंसकला रामचरणदास जी, ग्रंथनायक की आचार्य्या; वर्त्तमान हैं। *
१५	१८८२	श्री अयोध्या।	परमहंस पं० श्री ६ गङ्गादास जी, बड़ीकुटिया प्रमोदवन, वर्तमान हैं
१६	१८८३	,,	पं० श्री६ जानकीवरशरण (प्रीतिलता) जी* लक्ष्मणकिला, माघ, अमावस्या सं० १९५८में साकेतवास
१७	१८८४	छपरा, सारन।	पुजारी श्री अवधविहारीशरणजी, साकेतवासी।
१८	,,	भागलपुर, सूजागंज।	आचारी स्वामी श्री ६ नारायदास जी, विरक्त। ९१वर्ष की अवस्था में १९०१ई० में साकेतवास।
१९	१८८७	श्री अयोध्या जी रामकोट।	वैष्णव पण्डित श्री५रामनारायणदास जी, वर्त्तमान।
२०	,,	पटना शहदरा	श्री ५ राघवशरण जी बढ़ैयावाले, साकेतवासी।
२१	१८८८	पटना बांकीपुर।	श्री६ भीष्मदासजी। श्रीअयोध्या जी से साकेतवास हुआ।
२२	,,	खैरा, सारन।	श्री खाकी जी, साकेतवासी।
२३	१८८९	श्री जनकपुर, मिथिला।	श्री६ नारायणदास जी रत्नसागर, साकेतवासी।
२४	,,	राजगृह, मगध	श्री रामदास जी, साकेतवासी।
२५	,,	युगेश्वर, मसौढ़ी पटना (अब्दुल्लाह चक)।	श्री ५ नवलअली (रामशरणदास जी) वर्त्तमान हैं।
२६	१८९१	श्री वृन्दावन, मथुरा।	श्री राधाशरणजी, गोलोकवासी

* देखिये पृष्ठ ३६-३७ शृंगार भावना प्रकरण।

२७	१८९३	श्री अयोध्या जी रामकोट, बड़ी जगह ।	महन्थ श्री राममनोहर प्रसादजी (सभापति), वर्त्तमान हैं ।
२८	१८९३	श्री अयोध्या	श्री १०८रामचरणदासजी* प्रमोद-वन बड़ी कुटिया, फागुन अमावस्या १९२० सम्वत् में साकेतवास ।
२९	१८९४	"	श्री रामवल्लभा शरणजी, सरयूतट, श्री जानकीवर शरणजी के शिष्य के पुजारी । वर्त्तमान हैं ।
३०	१८९५	"	श्री५ चन्द्रप्रभा,† पुजारी श्रीश्याम-सुन्दरीशरणजी "श्रीकनकभवन बिहारी" जी के विशेष करुणा-पात्र । वर्तमान हैं ।
३१	१८९६	"	परमहंस श्री १ सीताशरण जी, कनक भवन, वर्तमान हैं ।
३२	"	"	श्री५ कनकभवन बिहारीशरणजी रामघाट । साकेतवासी ।
३३	"	"	श्रीकाशीजी के श्री शीतलदासजी (अस्सी संगम) साकेतवासी ।

* हमारे चरित्रनायक को श्री अयोध्यावास के लिए वहां जाने पर आपही से पँचसा, लँगोटी कमंडलादि मिला । देखिये पृष्ठ ६२ ।

† आप बड़े योग्य महात्मा हैं । बाल्यावस्थाही से आप को वैराग्य हुआ है । भजन के अतिरिक्त एक घड़ी भी आप को कभी अन्य काम नहीं । "श्रीकनकभवनविहारीजी" आप को प्राणाधिक प्यारे हैं । ऐसा प्रेम बहुत कम देखने में आता है । आप पर कई बार विहारिणीविहारीजी (श्रीसीताराम) ने कृपा दर्शाई है । आप के पदों में श्रद्धा भाग्य से हो सकता है । वर्तमान हैं ।

३४	१८९६	श्री अयोध्या	श्री काशी चौकाघाट के श्री ५ जानकीदास जी, साकेतवासी।
३५	"	"	पण्डित श्री५रामरत्नदासजी,अधिकारी, ब. ज। वर्त्तमान हैं।
३६	१८९७	"	जयपुर के श्री ६ सीताराम शरण जी,आनन्दभवन। साकेतवासी
३७	"	"	श्री५ गोमतीदास* जी महाराज, श्री हनुमन्निवास, वर्त्तमान हैं।
३८	"	"	श्री रामफ़क़ीरा जी, राम कोट। साकेतवासी।
३९	१८९८	"	वैष्णव पण्डित श्री ६ रामवल्लभाशरणजी महाराज, श्री जानकीघाट। वर्त्तमान हैं। प्रति दिन कथामृत की वर्षा करते हैं।†
४०	"	"	श्री ५ रामरसरङ्गमणि जी, ‡ श्री जानकीघाट, भूर के मन्दिर में, वर्त्तमान हैं।

* आप श्री हनुमान जी के अनन्य भक्त, अच्छे तपस्वी, सर्वहित-कारक और हरिजनवल्लभ हैं। आप का दर्शन सुखद है।

† आज कल श्री अवध में सब के मुख से इन की प्रशंसा सुनी जाती है।

‡ श्रीराघवेन्द्र सखाजीके कृपापात्र श्री ६ सीतारामशरण रसरंगमणि, विरक्तवर। आप हमारे चरित्रनायक के भक्तमाल के शिक्षक हैं और आप ने इन्हें "श्रीपीपाजी की कथा" तथा "टीका भक्तमाल" के लिखने में भी सहायता दी है। आप ने स्वयम् भी नीचे लिखी हुई पुस्तकों की रचना की हैं।—

श्रीसीताराम अष्टयाम सेवा (वार्तिक), श्रीरामस्तवराज की टीका, श्रीरामध्यानमंजरी की टीका, श्रीसीतारामश्रीभावली और रामप्रेमपदावली, रामप्रियपंचक, श्रीरामानन्दयशावली,

४१	१८६८	श्री अयोध्या	श्री ५ प्रमोदवन विहारीशरणजी, ऋणमोचन, साकेतवासी।
४२	"	"	श्री श्यामसुन्दरशरण जी, महन्त, शृङ्गारकुंज, प्रमोदवन, वर्त्तमान हैं।
४३	"	"	श्रीकाशीवाले परमहंस श्री ५ राम सियाशरण जी, साकेतवासी।
४४	१९००	"	श्री महावीरदास जी * हजूरीजी का स्थान, वर्त्तमान हैं।

सन १८४९ ई० से सन १८९३ ई० तक जब के इस ग्रंथ के नायक गृहस्थाश्रम में रहे और फिर १८९४ ई० से अद्यावधि पूर्वोक्त महात्माओं की तथा श्रीअयोध्याजी के अन्यान्य सब ही महात्माओं की इन पर विशेष कृपा रही और रहती आती है।

इन्हों ने सभी महात्माओं के प्रति एक स्थान में कहा है "आपही के पदपद्म पराग की भरोसा है।" अतएव—

"बंदि चरन मांगों सब काहू। सियरामपद प्रेमनिबाहू"

कैसा प्रेमनिवाह ? कि—

"प्रान तोर, मैं तोर, बुधि, मन, चित, यश तोर सब।
एक तुहि तो मोर, काहि निवेदों तोहि ? पिय !॥"

यह प्रबन्धलेखक भी यहीं पर सब सन्तों से ऐसाही

श्रीजानकीशरणावली, श्रीरामशतवन्दना, श्रीयुगलनाममंजरी, श्रीरामलीला सम्वाद, श्रीसरयूतरंगलहरी, श्रीरामयशविलास, श्रीसीतारामकुसुमाविलास, श्रीसीतारामवर्षाविलास, श्रीसीतारामभूलनाविलास, श्रीहनुमतजन्म कथा, श्रीरामानन्दजन्मोत्सव, और श्रीध्यानमंजरी मकरंदमाधुरी।

* आपही के प्रबन्ध से श्रीजानकीघाट पर श्रीसरयू जन्मोत्सव पांच छः वर्ष से होने लगा है।

विनय करता हुआ तथा इन महानुभावों की असीम कृपा की आशा रखता हुआ इस प्रबन्ध को समाप्त करता है।

हरिगीतिका।

बे अन्त महिमा रावरी, करुना हमेस जनाइये।
मन मलिनता मम नास कर, निज दास योग्य बनाइये॥
पदपदुम प्रभु महँ प्रीति हो, मन मधुप इव कोलुप बनै।
मुख रटत निसदिन नामहरि, "सिव" बिमल यश कीरति भनै।
दोहा-बिकल चित्त बिनती करों, बार बार सिरनाय।
दयावन्त सब सन्त सों, होवहु आप सहाय॥
सपनहु मो मन नहि तजै, आस श्रीभगवान।
जासु कृपा की कोर तें, होत सकल कल्यान॥
दोहा-जयभगवत, जय भक्तजन, जय भगवानप्रसाद।
जय जय जय मिल मीत सब, कहहु सहित अह्लाद॥

अन्तिम बन्दना।

हरिगीतिका।

जय जगतकारन जयति जय, जगदीस जनरञ्जन सदा।
जय सत्य चित आनन्द प्रभु, अबिकार, नित, जय सर्वदा॥
आकार गुन बिनु कहत हैं, तब सकल गुन की खान हो।
निज भक्त के सुख हेत नित, नव धरत बपु भगवान हो॥
लखि रावरी लीला ललित, जन लहत परमानन्द हैं।
मूरति मनोहर धारि बर, बिचरत सहज निर्द्वन्द हैं॥
नखतावली नख-आवली, छबि चाकरवि पदतल हरै।

त्रिवली सुनाभी, भौंर जनु, हृत सहज रविजा मों करै ॥
करपल्लव कंज सनाल जिमि, सोहत सरितसोभा भरा ।
पै धरत बान कराल जब, कांपत हृदय खल को सदा ॥
उर मालमोती होति छबि, जनु गंग नीलाचल बहै ।
लखि ग्रीव उड़त कपोत नभ, तिमि संख सिंधुहिं छिप रहै ॥
नीरज-सुमन-मन भक्त को, बिकसत निरख मुसकानछवि ।
जरजरत होवत हानि लखि निज, गिरत सिंधु हरास रवि ॥
युग नयनकंज सनेहअयन, निहारि करत निहाल नित ।
तुव चरन जाहि भरोस दृढ़, नहि आस औरहुँ कतहुँ चित ॥
यह माधुरी मूरति कबौं, नहि हृदयपट ऊपर चढ़ै ।
नहि नाम राउर भूलहूं, मोहि प्रीति सों मुख तें कढ़ै ॥
सुनि गाथ सुन्दर नाथ को, नहि प्रेमजल आंखिन ढरै ।
तुव निरखि बिनु कारन कृपा, मनमूढ़ नहि चरनन परै ॥
भरमत फिरत भव लगि रहौं, लिपटाय मायाजाल मों ।
नहि सरन कहुँ तजि चरन अब, देखत अहौं यहिकाल मों ॥
"सिव" रावरो पदपदुम युग, बन्दत अहै सिरनाय कै ।
कलिमल बिकल यह दासको, कर गहिय अब अपनाय कै ॥

ग्रंथकर्त्ता का परिचय।

सोरठा।

गनपत पुनि सिर नाय, कथन चहौं निज वृत कछुक।
सादर होय सहाय, बानी बानी सुफल कर ॥

सवैया।

कायथ गांव सुख्यात महान पुरातन त्यों सब लोग बतावै।
नाम अहै इख्त्यारपुरी* इक कोस हिं आरे ते पच्छिम पावै ॥
बाटिका बाग घनी फुलवारि सुमन्दिर देव अनेक सुहावै।
कूप अनूप नदी दुइ ओर रितूबरषा छबि नैन जुड़ावै ॥
होत कबौं फुटबाल, किरीकेट, नाटक जो हरिचन्द बनाये।
छात्र कबौं जुरि के इक ठौर कमेटि करैं पढ़ि लेख सुहाये ॥
बैठि कहूं दस पांच एकत्र सुगत पढ़ैं मन चित्त लगाये।
चौसर खेल की भीड़ लगी, कहूँ खेलत हैं सतरंज बिछाये ॥

कबित्त।

नाभि तिमि ग्रामि भये लोग हैं अनेक यहां जासु जस-कीर्त्ति रहि छाय चहुंघाई है। धनवान गुनवान ज्ञानवान विद्यावान जानत सकल कछु बात ना बनाई है ॥ आरा-परगना के कानूनगोय होते रहैं पादसाही पदवि "छौसैया" की सुहाई है। जासु बंससाखा अजौं पाई जात कई जिला जाय जाय जहां जिन नगरी बसाई है ॥

सिरी भगवान सिंह भये एक जन तहां करत वकीली रहे नगर जवनपुर। तासु लघु भ्राता भे गनेसपरसाद जौन बड़े विद्यावान गान बादहुँ निपुन बर ॥ पुत्र गुरुस-हाय सो तासिलदार गाजीपुर जाहि सुनागार सुत चार दिन्हे

---

* अख्तियारपुर, उपनाम बड़का गांव।

ईश्वर। सिरी हरिबंस, जगदप, रामानुग्रह श्री अरु सिरी काली चारों भाई बड़े नेहघर ॥

प्रथम द्वै भाई नहिं पायो कोऊ पुत्ररत्न तीसरे को पांच नाम नीचे जो बनायो है। रघु, हरि, राम, हर, श्याम इन शब्दन में "नन्दन" लगाये नाम पूरन सुहायो है ॥ करैं श्यामनन्दन वकीली, रामनन्दन जू बांकीपुर जजि मों किरानी काम पायो है। रघु, हर रहै मुनासिफी के सिरिस्ते-दार, हरि तो जवानी सुरधाम को सिधायो है ॥

उल्लाला–सुवन रामनन्दन सुखद, श्री भवेशनन्दन अहैं।
सुत हरनन्दन मीत वर, श्री युगेशनन्द न कहैं ॥

दो०—द्वै सुत कालिसहाय हीं, शिवनन्दन इक नाम।
अपर महानन्दन गयो, बालकाल सुरधाम ॥

सवैया।

मीतन पाहि सुनावत हौं सुवृत्तान्त कछु अब आपन खास।
सम्वत उन्निस सै दस सात भयो मम जन्म सुआसिन मास ॥
बार निसाकर दूजतिथी रितु-शारदि-पक्ष अँजोर प्रकास।
याम चतुर्थ भयो अति मोद हिये उमग्यो सब केर हुलास ॥

कवित्त।

आदि पढ्यों पारसी करामतअली के पास, पुनि पूज्य-पाद पितु नेह सों पढ़ायो है। पाछे पढ़ि बांकीपुर कियो इन्ट्रेन्स पास, शीघ्र प्रभु दोयम किरानी बनवायो है ॥ भयों एकौंट पुनि अव्वल किरानी तिमि, अब मुतरजिम को पद वर पायो है। "शिव" की कृपा तें कन्या तीन युग पुत्र पायों, ज्येष्ठ सुत सुख जगदीस ने दिखायो है ॥

सो०—ब्रजनन्दन जा नाम, हैं वकील आरा नगर।
द्वै सुत जाहि ललाम, करि किरपा ईश्वर दियो ॥

प्रथम सुवन कहँ मीत, श्री रमेशनन्दन कहैं।
भाषत लघुहिं समीत, श्री दिनेशनन्दन सबै ॥
सन्तन देव असीस, होंय चिरंजीवी सकल।
गहे चरन जगदीस, रहैं सुखी संसार मों ॥

कवित्त।

पाय उतसाह पूज्य अम्बादत्त व्यास जू तें हिन्दी हित प्रीति मीति हियो उमहाई है। पुस्तक अनेक पढ्यों भाषा के भँडार मांहि रचना गोसाईं हरिचन्द आदि भाई है॥ काव्य रीति प्रीति सों महंथ जो सुमेर सिंह, * कविता मर्मज्ञ, कृपा करि कै सिखाई है। करुनानिधान पूज्यपाद ब्रजबाला जीव, साधु उदासीन, नाम महिमा जताई है॥

चौ०—अल्प काल गत भयो बंगभाषा भलि भाई।
ताहि पढ़न हित कियों कछुक श्रम मन चित लाई॥
अरु पँजाबि ग्रंथ पाठ महँ भयो अभ्यासा।
नित नव विद्या हेत बढ़त चित नव अभिलासा॥

दो०—सावन सुखद सुहावनो, बर्षा बिसद बहार।
एक समय हाजिर भयों, वैद्यनाथ दरबार॥

कवित्त।

गयों एक बार पुनि अम्बादत्तव्यास संग नगर अनेक नाम सब सुन लीजिये। काशी औ अयोध्या, लखनऊ औ बरेली तिमि, अम्बाला, हरीदुआर, हिये मों पतीजिये॥ पुठि अमरितसर, दिल्ली औ लहौर मीत, परमपुनीत ब्रजभूमि, सुख भींजिये। तीरथ त्रबेनी तिहुँ-ताप-त्रास-देनहार, तहाँ ते गमन गेह मनमा करीजिये॥

---

* निज़ामाबाद ज़िला आज़मगढ़ के रहने वाले श्री हरिमन्दिर पटना के महन्थ, श्री गुरु मरसिंह साहिब खत्री गुरु के वंशज।

पुनि बार दूजो पुज्यपाद पिता जीव संग, गयो वाहि ठौर सबै, और गौर कीजिये। आगरा, मुकानपुर मिश्र परताप जहां-दूजे हरिचन्द-भई भेंट सों पतीजिये ॥ काशी, कलकत्ता, विन्धअँचल औ बीरभूमि-अष्टवक्रथान-कई बार सुकीजिये। व्याघ्रपुर, ससराम, ये तों हैं निकट धाम ऐसे केते ठाम कहा -गनना करीजिये ॥

बानी की कृपा तें अजों रच्यो सुअनेक ग्रंथ,मीत बर मेरे ताको नाम सुनलीजिये। दूजो भाग स्वामी "दयानन्दमत-मूलोच्छेद", "साहबप्रसाद" कथा पाठ कर लीजिये ॥ "बाबू हरिचन्द जू की जीवनी" अनूप बनी, "संग्रहविचित्र" पर चित्त नेक दीजिये। "नाटक सुदामा" अरु "कविताकुसुम" काव्य "कृष्ण औ सुदामा" को पियूष रस पीजिये।

सो०—लिख्यों बंगइतिहास, रामदीन प्रिय अनुमती।
वृत्त ग्राम निज खास, बरनन कियों पिरीति सों ॥
श्री अम्बिकादत्त व्यास, "गोसंकट" नाटक रचै।
तासु मीत सहुलास, उलथा इँगरेजी कियों ॥

दो०—ईस कृपा तें पुत्रहूं, विद्यारासिक महान।
सम्पादक लेखक कवी, धर्म्माहि निष्ठावान ॥
सीसनाय युग जोरकर, विनय करों भगवान।
सब विध पुत्र पउत्र को, सदा करब कल्यान ॥
रहैं जाहि सों धर्म्म रत, नेह संत भगवन्त।
"शिव" निज छगि का मुख करै, पाप हिये बलवंत ॥

संवत श्रुति रितु निधि ससी, मार्गशीर्ष शुभमास।
भयो पूर्ण यह ग्रंथ जो, होवत आज प्रकास ॥

॥ श्रीः ॥

"सिय रघुबीर बिबाह, जे सप्रेम गावहिँ सुनहिँ।
तिनकहँ सदा उछाह, मङ्गलायतन रामयश"॥

प्राणनाथ ! प्राणेश्वर ! प्राणवल्लभ !

दो०-उत्सव होत विवाह को, सुनि आयों तुव द्वार
राजिव लोचन सांवरो, विनवों पद बहु वार ॥१॥
दूलह राजा राम जू, दुलहिन सिय सुकुमार।
छबि अनूप लखि आज की, तनमन डारत वार २

(क०) सुनि के बिवाह रघुराज आज रावरे को बाढ़त उछाह दीन गावत बधाई है। जनक नगर मँह भीड़ भई भूपन को डगर डगर बीच आनँद सवाई है॥ सखियां सयानी इतरानी रनिवास बीच, देखन को छवि सिरी जानकी, की धाई हैं। मंडप कलस कर निरखि अपार सोभा, बरखत फूल देवनारी हरखाई हैं ॥३॥

जाचक अजाचक भे दान की उदारता सों, दुखिया गरीबन की रही न निसानी है। वन्दी भाट गायक कवि गन निहाल भये, सुयस बखानत पूनीत भइ वानी है॥

मन ब्रजवल्लभ सुदासन की आस पूजी,
सखिन की बानी. आज प्रेम रस सानी हैं।
व्याह को उछाह को सम्हार न सकत राव,
सहज उदार आज भये बड़ दानी हैं ॥४॥

बाढत हिया हुलास, छवि विवाह की निरखि यह
विनय करत है दास, अरज नाथ कछु मानिये॥५॥
मन मों बाढ़ै प्रेम, नाथ तुम्हारे चरन मों।
रहे यही यक नेम, तुम तजि आस न दूसरी ॥६॥
इन नयनन सो नाथ, निरखौं छवि सरकार की।
पुन पुन नावौं माथ, पुरवहु यह मन कामना ॥७॥
हृदय प्रेम को नेम, जिहवा तजे न नाम को।
नित नव बाढ़ै प्रेम, मनसा तजै न चरन को ॥८॥
जैसे जल विन मीन, तुम लगि विनवौं दिवस निसि
दीनन मों यह दीन, ह्वै व्याकुल मांगत यही ॥९॥

प्यारे !

आज तो विवाहोत्सव है, इस उपलक्ष में आज सभी बधाई देने आए हैं और मुंह मांगे वस्तुओं को पाकर अजाचक हो घर जा रहे हैं। आज पात्रापात्र का विचार नहीं है, जो आज की भी भीड़ में इस दीन को मुंह मांगा वर न मिला तो फिर क्या आसा है । पर नहीं क्यों ?

तुम्हारे यहाँ से तो कभी किसी को नहीं नहीं मिली—मांगने वाले न आवें तो दूसरी बात है। किन्तु आज तक तो कोई विमुख न फिरा, तिस पर विशेषतः आज के दिन। मांगना तो बहुत कुछ है किन्तु कहाँ तक सुनाऊं, आज तुम्हे सुनने को समय ही कहाँ है। और यदि हो भी तो आज इस आनन्द के दिन अपना दुःख तो मैं नहीं सुनाना चाहता। तुम चाहे बुरा न मानो परन्तु ये आस पास में खड़ीं सखियाँ और आनन्द मनाने वाले नर्म सखा क्या कहेंगे—यही न कि प्रतिदिन तो अपना पचड़ा सुनाता ही है आज भी इसे उससे छुट्टी न मिलती—तो जाने दो यही सही। किन्तु सबों को तो कुछ न कुछ देही रहे हो, दान का भंडार तो आज खुलाही है, तो हमे भी एक दो वस्तु दे ही न दो। तुम्हारे दान के सामने तो ये कुछ नहीं, किन्तु मेरे लिये तो अनन्त सम्पत्ति बहु मूल्य पदार्थ है। यही कि अपने चरण कमलों में निष्कपट सच्चा अविरल प्रेम दो, अपने वियोग में मुझे अश्रु बहाने की शक्ति दो, अपनी पुनीत भक्ति दो, इन आँखों को अपने लिये आंसू दो, इस पाषाण वत कठोर हृदय को आर्द्र करो, मन को स्थिर करो, हृदय में सन्तोष दो, औरों से प्रीति छोड़ावो, अपनी ओर प्रीति बढ़ावो। ओह बहुत बक रहा हूं। क्षमा करना, अपनाना। जैसा हूं तुम्हारा ही हूं। किससे कहूं? तुम न सुनोगे तो कौन सुनेगा? अच्छा यह बधाई लो—जो उचित समझो वही दो।

आरा, ५ शु० अ०
१९६५

तुम्हारा
ब्रज वल्लभ।

प्रभो !

ज्यों बालक कह तोतरि बाता।
सुनहिं मुदितमन पितु अरु माता॥
बार बार बिनवौं कर जोरे।
मन परिहरै चरण जनि भोरे॥

मोसम दीन न दीनहित, तुम समान रघुबीर।
असबिचारि रघुबंसमनि, हरहु विषम भवभीर॥
कामिहिनारिपियारिजिमि, लोभहिप्रियजिमिदाम
तिमि रघुवंस निरन्तर, प्रिय लागहु मोहि राम

आरा,
अ.शु.५
१९६५

सर्कार का प्रेमाभिलाषी दीन पुत्र
सीतारामी
(कं० बि० शा० ब्रजेन्द्र प्रसाद)

शोभाधाम, प्राणेश्वर, प्रियतम प्रभो !

अविरल भक्ति विशुद्ध अति, श्रुति पुराण जे गाव
जेहि खोजत योगीशमुनि, कपिप्रसाद कोउ पाव
सोइ भक्ति गति रहनि सोइ, निजपद कमलसनेहु
सोइ विवेक सोइ सुख सुमति, सोइ सतसङ्गति देहु

वेरावलबन्दर
(काठियावाड़)
विवाह पञ्चमी

तुम्हारी आश्रिता
सियचेरी लावण्यलता (रामसुन्दर शरण)

श्री बाबू गोविन्ददेवनारायण शरण, B. A. ने प्रकाशित किया॥
C. P. Press, Benares.

॥ श्रीः ॥

"सिय रघुबीर बिबाह, जे सप्रेम गावहिँ सुनहिँ।
तिनकहँ सदा उछाह, मङ्गलायतन रांमयश"॥

प्राणनाथ! प्राणेश्वर! प्राणवल्लभ!

दो०-उत्सव होत विवाह को, सुनि आयों तुव द्वार
राजिव लोचन सांवरो, विनवों पद बहु वार॥१॥
दूलह राजा राम जू, दुलहिन सिय सुकुमार।
छबि अनूप लखि आज की, तनमन डारत वार२

(क०) सुनि के बिवाह रघुराज आज रावरे को बाढ़त उछाह दीन गावत बधाई है। जनक नगर मँह भीड़ भई भूपन को डगर डगर बीच आनँद सवाई है॥ सखियां सयानी इतरानी रनिवास बीच, देखन को छवि सिरी जानकी की धाई हैं। मंडप कलस कर निरखि अपार सोभा, बरखत फूल देवनारी हरखाई हैं॥३॥

जाचक अजाचक भे दान की उदारता सों, दुखिया गरीबन की रही न निसानी है। वन्दी भाट गायक कवि गन निहाल भये, सुयस बखानत पूनीत भइ वानी है॥

भन ब्रजवल्लभ सुदासन की आस पूजी,
सखिन की बानी आज प्रेम रस सानी हैं।
व्याह को उछाह को सम्हार न सकत राव,
सहज उदार आज भये बड़ दानी हैं ॥४॥

बाढत हिया हुलास, छवि विवाह की निरखि यह
विनय करत है दास, अरज नाथ कछु मानिये॥
मन मों बाढ़ै प्रेम, नाथ तुम्हारे चरन मों।
रहे यही यक नेम, तुम तजि आस न दूसरी ॥६॥
इन नयनन सो नाथ, निरखौं छवि सरकार की।
पुन पुन नावौं माथ, पुरवहु यह मन कामना ॥७॥
हृदय प्रेम को नेम, जिहवा तजे न नाम को।
नित नव बाढ़ै प्रेम, मनसा तजै न चरन को ॥८॥
जैसे जल विन मीन, तुम लगि बिनवौं दिवस निसि
दीनन मों यह दीन, ह्वै व्याकुल मांगत यही ॥९॥

प्यारे !

आज तो विवाहोत्सव है, इस उपलक्ष में आज सभी बधाई देने आए हैं और मुंह मांगे वस्तुओं को पाकर अजाचक हो घर जा रहे हैं। आज पात्रापात्र का विचार नहीं है, जो आज की भी भीड़ में इस दीन को मुंह मांगा वर न मिला तो फिर क्या आसा है । पर नहीं क्यों ?

तुम्हारे यहाँ से तो कभी किसी को नहीं नहीं मिली-मांगने वाले न आवें तो दूसरी बात है। किन्तु आज तक तो कोई विमुख न फिरा, तिस पर विशेषतः आज के दिन। मांगना तो बहुत कुछ है किन्तु कहाँ तक सुनाऊं, आज तुम्हे सुनने को समय ही कहाँ है। और यदि हो भी तो आज इस आनन्द के दिन अपना दुःख तो मैं नहीं सुनाना चाहता। तुम चाहे बुरा न मानो परन्तु ये आस पास में खड़ीं सखियाँ और आनन्द मनाने वाले नर्म सखा क्या कहेंगे-यही न कि प्रतिदिन तो अपना पचड़ा सुनाता ही है आज भी इसे उससे छुट्टी न मिलती-तो जाने दो यही सही। किन्तु सबों को तो कुछ न कुछ देही रहे हो, दान का भंडार तो आज खुलाही है, तो इसे भी एक दो वस्तु दे ही न दो। तुम्हारे दान के सामने तो वे कुछ नहीं, किन्तु मेरे लिये तो अनन्त सम्पत्ति बहु मूल्य पदार्थ है। यही कि अपने चरण कमलों में निष्कपट सच्चा अविरल प्रेम दो, अपने वियोग में मुझे अश्रु बहाने की शक्ति दो, अपनी पुनीत भक्ति दो, इन आँखों को अपने लिये आंसू दो, इस पाषाण वत कठोर हृदय को आर्द्र करो, मन को स्थिर करो, हृदय में सन्तोष दो, औरों से प्रीति छोड़ावो, अपनी ओर प्रीति बढ़ावो। ओह बहुत बक रहा हूं। क्षमा करना, अपनाना। जैसा हूं तुम्हारा ही हूं। किससे कहूं? तुम न सुनोगे तो कौन सुनेगा? अच्छा यह बधाई लो-जो उचित समझो वही दो।

आरा, ५ शु० अ०
१९६५

तुम्हारा
व्रज वल्लभ।

प्रभो !

ज्यों बालक कह तोतरि बाता।
सुनहिं मुदितमन पितु अरु माता॥
बार बार बिनवौं कर जोरे।
मन परिहरे चरण जनि भोरे॥

मोसम दीन न दीनहित, तुम समान रघुबीर।
असबिचारि रघुबंसमनि, हरहु विषम भवभीर॥
कामिहिं नारि पियारि जिमि, लोभहि प्रिय जिमि दाम
तिमि रघुबंस निरन्तर, प्रिय लागहु मोहि राम

आरा, अ.शु.५ १९६५

सर्कार का प्रेमाभिलाषी दीन पुत्र
सीतारामी
(क० बि० शा० ब्रजेन्द्र प्रसाद)

शोभाधाम, प्राणेश्वर, प्रियतम प्रभो !

अविरल भक्ति विशुद्ध अति, श्रुति पुराण जे गाव
जेहि खोजत योगीश मुनि, कपिप्रसाद कोउ पाव
सोइ भक्ति गति रहनि सोइ, निजपद कमल सनेहु
सोइ विवेक सोइ सुख सुमति, सोइ सतसङ्गति देहु

बेरावलबन्दर (काठियावाड़) विवाह पञ्चमी

तुम्हारी आश्रिता
सियचेरी लावण्यलता (रामसुन्दर शरण)

श्री बाब गोविन्ददेवनारा[redacted], B. A. ने प्रकाशित किया॥